इकाई 4 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों का स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का वैचारिक विकास

4.3 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों का पारिभाषिक स्वरूप

- 4.3.1 आन्तरस्थितिक अध्ययन
- 4.3.2 सामान्य विधिमूलक (*नोमोथेटिक*) अध्ययन
- 4.3.3 सांख्यिकीय अध्ययन
- 4.3.4 प्रायोगिक अध्ययन
- 4.3.5 विशिष्ट वृत्यात्मक/आन्तरस्थितिक अध्ययन
- 4.3.6 नृजातीय अध्ययन
- 4.3.7 ऐतिहासिक अध्ययन
- 4.3.8 मिल की प्रायोगिक विधियॉ
- 4.3.9 तुलना एवम् इतिहास के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन

4.4 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों की कठिनाइयाँ

4.5 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का भविष्य

4.6 सारांश

4.7 मुख्य पारिभाषिक पद

4.8 अन्य सहायक अध्ययन सामग्री

4.9 बोध हेतु प्रश्न

4.0 उद्देश्य

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- इस अध्ययन या विधि के प्रयोग के द्वारा किसी विशेष देश और काल से परे जाकर ऐतिहासिक घटनाओं की तुलना की जाती है जिसके द्वारा घटनाओं को समझने हेतु व्याख्याएँ, सिद्धान्त निर्माण एवम् वर्तमान सन्दर्भों में उसकी प्रासंगिकता का पता लगाया जाता है।
- इस अध्ययन के द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक एवम् संस्थाओं की प्रक्रियात्मक विकास से सम्बन्धित ऐतिहासिक बदलावों का पता लगाया जाता है।
- इस अध्ययन की प्रविधि के द्वारा पार–सांस्कृतिक एवम् पार–ऐतिहासिक व्याख्याओं के लिए वास्तविक सामान्य सिद्धान्तों के विकास का पता चलता है।
- इस अध्ययन के प्रयोग के द्वारा अनुसन्धान हेतु लिये गये दो प्रतिदर्शों के बीच वास्तविक समानताओं एवम् विभिन्नताओं का पता लगाने के पश्चात् उनके बीच समन्वय की सम्भावनाओं का प्रयास किया जाता है।
- इस अध्ययन की विधि के प्रयोग के द्वारा स्थानिक एवम् कालिक घटना की

प्रक्रियाओं के अध्ययन हेतु पर्याप्त एवम् अनिवार्य कारणों का पता लगाकर उनका तर्क–निर्माण या अन्य ज्ञानमीमांसीय अनुमानों में प्रयोग किया जाता है।

4.1 प्रस्तावना

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन या विश्लेषण को एक नवीन शोध प्रविधि के रूप में जाना जाता है। इस प्रविधि का प्रयोग, जैसा कि हमने इसके उद्देश्यों में स्पष्ट कर दिया है– ऐतिहासिक परिघटनाओं, सामाजिक परिवर्तन के कारकों एवम् व्याख्या हेतु कारणता एवम् अनुमानात्मक ज्ञान हेतु तार्किक युक्तियों के निर्माण एवम् सिद्धान्तों की संरचना में इसका प्रयोग किया जाता रहा है। यद्यपि इसके समर्थकों, प्रयोगकर्त्ताओं एवम् व्याख्याकारों ने अपने ऐतिहासिक एवम् तुलनात्मक अध्ययनों में प्रविधि के रूप में प्रमुखता से स्थान दिया है, तथापि इस प्रविधि का वास्तविक स्वरूप क्या है, इस विषय पर बहुत कम अध्ययन किया गया है। यही कारण है कि इस प्रकार के अध्ययनों के स्वरूप पर प्रकाश डालने की महती आवश्यकता है जिसे हम आगे के कई खण्डों में स्पष्ट करने का प्रयास करेंगें।

आज के अन्तर–अनुशासनात्मक अध्ययन के वातावरण एवम् आवश्यकताओं के अनुरूप तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की प्रविधि का प्रयोग विभिन्न अनुशासनों एवम् विषयों के क्षेत्रों में हो रहा है। लेकिन यदि इसकी ऐतिहासिकता को देखा जाय तो यह एक समाज विज्ञान की विशिष्ट विधि के रूप में प्रयुक्त होता आ रहा है। यह समाज विज्ञान के विभिन्न विषयों से सम्बन्धित होकर उनका अध्ययन एवम् अनुसन्धान प्रस्तुत करता है।

इस अध्ययन के तीन केन्द्रीय विचार–बिन्दु हैं– कारणता की पहचान, समय के साथ बदलती प्रक्रियाएँ एवम् तुलना। इस प्रकार हम इस विधि का प्रयोग कर या इन अध्ययनों की सहायता से तीन प्रकार से सिद्धान्त–निर्माण कर सकते हैं। पहला है– व्यापक कारणता के विश्लेषण के रूप में तुलनात्मक इतिहास की प्रस्तुति। दूसरा है– किसी सिद्धान्त के समानान्तर दिखने वाला तुलनात्मक इतिहास की प्रस्तुति एवम् तीसरा है– सन्दर्भों एवम् विषय–वस्तुओं के विपरीत या भिन्न तुलनात्मक इतिहास की प्रस्तुति। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के अन्तर्गत होने वाले अनुशीलन में इन केन्द्रीय विचार बिन्दुओं के अतिरिक्त आवश्यकता के अनुसार अन्य विधियों एवम् विचार–बिन्दुओं को भी समाहित किया जा सकता है जो प्राक्कल्पना से लेकर निष्कर्ष तक पहुंचते हुए सिद्धान्त निर्माण की भूमिका में अहम होते हैं। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अनुसन्धान के अन्तर्गत उपर्युक्त विषयवस्तुओं पर अगले खण्डों में विस्तार से चर्चाएँ होगीं। इनके अतिरिक्त इन अध्ययनों या विधि की कठिनाइयाँ क्या है? इस पर भी विचार प्रस्तुत किया जायेगा तथा इस अध्ययन के भविष्य पर भी विचार प्रस्तुत होंगे जो निम्नलिखित में उपखण्डों में सुचिंतित है।

4.2 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की संक्षिप्त वैचारिक विकास–यात्रा

कतिपय विद्वानों ने तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों के ऐतिहासिक विकास के तीन चरणों को रेखांक्ति किया है। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अनुसन्धान का पहला चरण इस बात से सम्बन्धित था कि समाज आधुनिक कैसे बना, जो वैय्यक्तिक एवम् विवेकशील व्यवहारों पर आधारित होता है? इस प्रकार की चिन्तनधारा के प्रमुख विचारक हैं– अलेक्सिस डी० टोकेविले, कार्ल मार्क्स, एमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर और डब्ल्यू० ई०

बी० डू बोइस। दूसरे चरण ने ऐतिहासिकता से परे सिद्धान्तों पर प्रतिक्रिया दी और यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि सामाजिक तन्त्र कैसे समय के साथ विकसित् हुईं बिना स्थिर रहे। इस तरह के विचारों को प्रस्तुत करते वाले विद्वानों में राइनहार्ड बेंडिक्स, बैरींगटन मूर जूनियर, स्टीन रोक्कन, थेडा स्कोकपॉल, चार्ल्स टिली, माइकल मान्न और मार्क गाउल्ड। इन अध्ययनों का तीसरा चरण या वर्तमान स्वरूप तुलनात्मक–ऐतिहासिक अनुसन्धानों का सैद्धान्तिक झुकाव प्रायः किन्तु हमेशा उत्तर–संरचनात्मक नहीं होता है। इस चिन्तनधारा के प्रभावशाली लेखकों एवम् विचारकों में फिलिप गोर्स्की, जेम्स महोनी, अन्न लॉरा स्टॉलर और जूलिया एडम्स शामिल हैं।

प्रारम्भ में यह समाजशास्त्र की एक विधि के रूप में प्रचलित हुआ, परन्तु महोनी एवम् रुश्चमेयर ने इसे बहुविषयक विशेषताओं के विकसित् होती परम्परा की पहचान में तुलनात्मक–ऐतिहासिक विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत कियाआज यह समाजशास्त्र के अतिरिक्त इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र एवम् अन्य समाजिकी एवम् मानविकी विषयों में धड़ल्ले से प्रयुक्त होने वाली विधि बन चुकी है। हाँ, यह अवश्य ही अन्य की तुलना में समाजिकी के विषयों में विशेष स्थान रखती है।

4.3 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों का पारिभाषिक स्वरूप

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन में वस्तुतः कई तुलनात्मक विधियों का प्रयोग होता है। जैसे, सामान्यतः तुलनात्मक विधियाँ जिनका प्रयोग तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों के लिए होता है उनमें आख्यान शैली, मिल की प्रायोगिक विधियाँ, जार्ज बूल की विधि, सांख्यिकीय विधियाँ, नृवंशशास्त्रीय, प्रयोगात्मक, ऐतिहासिक आदि विधियाँ शामिल हैं। इनके अतिरिक्त भी आवश्यकता के अनुसार एवम् सन्दर्भों से सुसंगत हो कर अन्य शोध अध्ययन की विधियों का भी समावेश किया जा सकता है। ये सभी तुलना की विधियाँ स्थितियों, घटनाओं एवम् तथ्यों की तुलना कर समानता एवम् विभिन्नता का पता लगाने तथा उनके द्वारा कारणात्मक कारकों का अनुसन्धान करती हैं। अतएव तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का स्वरूप कुछ इस प्रकार का बन जाता है जिसमें बहुआयामी स्थितियों एवम् तथ्यों का अध्ययन सम्भव हो पाता है। कारणात्मक अध्ययन में यह देखा जाता है कि किसी अध्ययन–तन्त्र (*सिस्टम ऑफ स्टडी*) में प्रर्याप्त एवम् अनिवार्य कारण के रूप में कौन से तथ्य हैं? इनके अतिरिक्त तन्त्रों (*सिस्टम*) के वर्णनात्मक एवम् व्याख्यात्मक तर्कों का भी निर्माण किया जाता है। इस प्रकार तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन विभिन्न कालक्रमों एवम् ऐतिहासिक कालखण्डों के सापेक्ष सम्यक तुलना की विधियों का प्रयोग कर एक सन्तुलित शोध अध्ययन की विधि के रूप में समाज विज्ञान के केन्द्रीय अध्ययन–व्यवसाय का विषय बन गया है। इस प्रकार यदि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों का समग्रता में स्वरूप उपस्थापित करना हो तो इस कथित शोध–अध्ययनों पर भी संक्षिप्त प्रकाश डालना होगा जिसकी आगे चलकर तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की विशेषताएँ एवम् उसकी एक स्पष्ट विवरण प्रस्तुत किया जा सके जो निम्नवत हैः

4.3.1 आन्तरस्थितिक अध्ययन

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों के स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम आन्तरस्थितिक आध्ययन (*विदिन–केस स्टडीज*) को समझ लिया जाय। किसी भी विशेष स्थिति (*केस*) के अन्तर्गत किन्हीं विशेष कारकों जो कारणात्मक, प्रक्रियात्मक एवम् संरचनात्मक प्रकार के होते हैं, का अध्ययन इस विधि के द्वारा सम्पन्न किया

जाता है। आन्तरस्थितिक कारकों के अध्ययन में आख्यान (*नरेटिव*) शैली का भी महत्त्व है। इसके द्वारा दिये गए नमूनों की तुलना (*पैटर्न मैचिंग*) करके कारणों का पता लगाया जाता है। तुलनात्क–ऐतिहासिक अध्ययनों में प्रयुक्त होने वाले उन समस्त् ऐसी विधियाँ जिनमें कालिक प्रक्रियाओं के सापेक्ष अध्ययन नहीं किया जाता है, उनका भी आख्यानों के माध्यम से काल–क्रम के सापेक्ष घटनाओं या प्रदत नमूनों की तुलना करके इतिहास के सन्दर्भों को ग्रहण करते हुए कारणों का पता लगाया जाता है। इस तरह यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आन्तरस्थितिक अध्ययन के द्वारा तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन सम्भव है क्योंकि यह विज्ञान–सम्मत कारणात्मक कारकों एवम् नमूना सादृश्य के द्वारा स्थापित नियमों का तथा संरचनागत वैज्ञानिक अध्ययन का आधार तैयार करता है। इसलिए यह एक वैज्ञानिक ज्ञानमीमांसा का प्रकार बन जाता है जिसे प्रत्यक्षवाद कह सकते हैं। ऐतिहासिक विकास के क्रम में दार्शनिक प्रत्यक्षवाद का विकास विज्ञान एवम् उसके प्रयोगमूलक परिणामों के प्रत्यक्षीकरण पर आधारित था, अतः इसे लोक–मान्यता एवम् शिक्षित समाज में त्वरित स्थान मिलता गयासमकालिन पाश्चात्य परम्परा में आगे चलकर एक और चिन्तनधारा आयी जिसे उत्तर–आधुनिक चिन्तन–धारा के नाम से जानते है। उसमें उत्तर–आधुनिक ज्ञानमिमांसा जो प्रत्यक्षवादी एवम् विज्ञानसम्मत विचार–बिन्दुओं के विरुद्ध यह स्थापित करने का प्रयास करती है कि सामाजिक–सम्बन्धों की संरचनाओं की जटिलता के कारण नियम (*लॉज*) एवम् वैज्ञानिक पद्धति से स्पष्ट नहीं बनायी जा सकती अतः उनमें कारण एवम् प्रक्रियागत नियमों की पहचान करना एवम् सिद्धान्त निर्माण सम्भव नही है। यहाँ हम देख पा रहे हैं कि उत्तर–आधुनिक ज्ञानमीमांसा के द्वारा आन्तरस्थितिक अध्ययनों की रूपरेखा के विपरीत विचार होने के कारण कारणात्मक उपागमों का अध्ययन असम्भव बताया जा रहा है। अतः उत्तर–आधुनिक झानमीमांसीय शोध अध्ययन की विधि विज्ञान विरोधी होने से आन्तरस्थितिक अध्ययन एवम् तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन से सम्बद्ध नहीं हो सकता, अपितु इनके विरुद्ध खड़ा नजर आता है।

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन समाज के विभिन्न इकाईयों के साथ–साथ विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जैसे– राज्य, अर्थतन्त्र, धर्म, वर्ग, जाति, सामाजिक आंदोलन तथा बड़े समूहों की क्रियाओं का अध्ययन आदि। ये हैं दीर्घस्तरीय (*मैक्रो–लेवल*) सामाजिक संरचनाएँ जिनका अध्ययन तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि से होता है। इनके अतिरिक्त मध्यवर्ती स्तर की सामाजिक संरचनाएँ या संस्थाएँ भी इस विधि के द्वारा विश्लेषित की जाती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सूक्ष्मस्तरीय सामाजिक इकाईयों का अध्ययन सम्भव नहीं हो सकता। वरन् इन सूक्ष्मस्तरीय सामाजिक इकाईयों का भी अध्ययन तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि से हो सकता है जिसके लिए आन्तरस्थितिक अध्ययन (*विदिन केस मेथड*) की आवश्यकता पड़ती है। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के संस्थापक विद्वानों में से एक मैक्स वेबर का मानना है कि वैय्यक्तिक घटनाओं के कारणात्मक विश्लेषणों के लिए भी तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के अन्तर्गत होने वाले आन्तरस्थितिक विश्लेषणों का उपयोग होता है, जिससे हम किसी भी सामाजिक इकाईयों या संरचनाओं का अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों का स्वरूप मुख्यतः मध्यवर्ती स्तर एवम् दीर्घस्तरीय सामाजिक संस्थाओं के साथ–साथ सूक्ष्म सामाजिक इकाईयों का भी आन्तरस्थितिक अध्ययन कर कारणात्मकता एवम् प्रक्रियागत विकास जो इतिहास के कालक्रम में हो सकते हैं, का सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रकार मानव–जीवन को प्रभावित करने वाली समस्त् उन

घटनाओं का तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन कर सकते हैं जो संरचनागत ढंग से सूक्ष्म, मध्य एवम् दीर्घस्तरीय सामाजिक इकाईयों या समूहों के उदाहरण हैं। यानि व्यक्ति के रूप में मानव एवम् उसके सरल सम्बन्धों से लेकर विश्वस्तर के समस्त् सामाजिक इकाई एवम् समूहों का अध्ययन तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत कर सकता है, यदि वह तुलना के कारणात्मकता, प्रक्रियात्मकता एवम् संरचनात्मकता से सम्बंधित नियमों की खोज एवम् स्थापना कर सकें जो तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का मूल हैं।

यहाँमुख्य ध्यातब्य यह भी है कि कोई अध्ययन तुलनात्मक मात्र हो जाने से ही तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन नहीं बन जाता। उदाहरणस्वरूप एडवर्ड सईद की पुस्तक *ओरिएँटलिज्म* (1978) एवम् अन्य उत्तर–आधुनिक अध्ययन भी जिसमे तुलनात्मक विधि का प्रयोग है, परन्तु उन्हें तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन नहीं कहा जा सकता क्योंकि इनमें मध्य एवम् दीर्घस्तरीय समूहों की तुलना तो मिलती है, परन्तु समाज–वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है। इसी तरह औपनिवेषिक विरासत् का सांख्यिकीय विश्लेषण पर एस्मोगलू जॉनसन एवम् रॉबिनसन की रचना में तुलना तो देखा जा सकता है, परन्तु इसमें आन्तरस्थितिक अध्ययन (*विदिन–केस स्टडीज*) नहीं प्राप्त होता। पुनः टिली की रचना *द कान्टेन्सस फ्रेंच* (1986) में समाज वैज्ञानिक अध्ययन का प्रयोग है तथा आन्तरस्थितिक विधि (*विदिन–केस मेथड*) का भी प्रयोग है, परन्तु स्पष्ट रूप से स्थितियों के भीतर (*इन्टर–केस कम्पैरीजन*) नहीं है जिसके चलते इसे तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार उपर्युक्त सीमाओं एवम् पारिभाषिक शर्तों को यदि ध्यान में रखकर तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की रूपरेखा पर विचार किया जाय तो इसके स्वरूप–निर्धारण के लिए समाज विज्ञान की उन अन्य पारम्परिक शोध अध्ययन की विधियों की भी तुलना एवम् उनके स्वरूप पर एक संक्षिप्त प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है जिसका विवरण अब हम निम्न उपशीर्षकों में प्रस्तुत करेगें।

4.3.2 सामान्य विधिमूलक (*नोमोथेटिक*) अध्ययन

सामान्य विधिमूलक या *नोमोथेटिक* (*नोमोस* का अर्थ विधि से है) यह एक ग्रीक शब्द है व्याख्याएँ यद्यपि प्राकृतिक विज्ञान की परिघटनाओं के सम्बन्ध में ठीक तो हैं, परन्तु समाज–विज्ञान की जटिलताओं एवम् उनके इकाईयों एवम् संस्थाओं की व्याख्यामूलक विधि के रूप में *नोमोथेटिक* या विधिमूलक पद्धति का प्रयोग अन्य विज्ञानों की तुलना में न्यूनतम सत्य का दावा करने वाले निष्कर्षों के कारण अति–सामान्यीकरण के दोष से ग्रसित् हो जाते हैं। यद्यपि इस विधि के प्रयोग में कई नमूनों/स्थितियों (*केसेज*) का विश्लेषण एवम् उनके बीच की वैज्ञानिक विधानों को पहचान कर सामान्यीकरण का प्रयास किया जाता है, परन्तु सामाजिक विज्ञान की संरचनागत/ढाँचागत जटिलता एवम् उनके बीच के सम्बन्धों की जटिलताओं के कारण विधिमूलक अध्ययन न केवल कठिन है, वरन् बहुस्थितिक (*मल्टीपल–केस*) तथा आन्तरस्थितिक तुलना (*इंन्टर–केस कम्पैरीजन*) के द्वारा सामान्यीकृत विधानों के निर्माण का प्रयास करता है। अतः *नोमोथेटिक* या विधिमूलक अध्ययन जिन दो प्रमुख विधियों का प्रयोग करता है, वे हैं– सांख्यिकीय एवम् नियन्त्रित प्रयोगशाला–विधि। अतः तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के अन्तर्गत विधानात्मक तुलना हेतु उपर्युक्त दो विधियों यथा–सांख्यिकीय एवम् प्रयोगमूलक अध्ययन की आवश्यकता होती है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत है।

4.3.3 सांख्यिकीय अध्ययन / विधि

समाज विज्ञान में औपचारिक रूप से सर्वाधिक प्रचलन में या परम्परा में सांख्यिकीय अध्ययन की विधि है। इस विधि के द्वारा नियन्त्रित प्रायोगिक अध्ययन को भी प्रयोग में लिया जाता है। इस विधि के द्वारा परिणामों में आने वाले विभिन्नता को न्यूनतम स्तर तक ले जाकर एवम् आन्तरस्थितिक तुलना के द्वारा बहुत हद तक सामान्यीकरण के विधान प्राप्त कर लिये जाते हैं। इस प्रकार सांख्यिकीय अध्ययन के द्वारा किसी शोध के परिणामों में होने वाले विचलन को भी कम किया जा सकता है जो विधानमूलक सिद्धान्तों (*नोमोथेटिक*) की रचना में बहुत ही सहायक होते हैं। चूँकि विधानमूलक सिद्धान्त रचनाओं के द्वारा ही तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का लक्ष्य प्राप्त कर समाज एवम् सामाजिक जगत् की विश्वदृष्टि तैयार करने में सहायता प्राप्त होती है, अतः सांख्यिकीय अध्ययन का सम्बन्ध तुलनात्क–ऐतिहासिक अध्ययन के साथ, अत्यन्त गहराई से जुड़ा हुआ है।

शोध–अध्ययन की परम्परा में अन्य विधियों की तरह सांख्यिकीय विधि की भी आलोचना होती है। इसमें सर्वप्रथम यह आपत्तिजनक समझा जाता है कि सांख्यिकीय औसत् के अनुरूप वास्तविक जगत् में कोई अस्तित्त्ववान कारक है या नहीं। यदि नहीं, तो परिणाम सार्थक नहीं प्रतीत होंगे दूसरी आपत्ति होती है कि किसी नमूने की तुलना कब, कहाँ एवम् किस स्थिति (*केस*) में की जाय? यह निर्णय कर पाना भी कठिन होता है। ऐसे में आन्तरस्थितिक अध्ययन होने के बावजूद भी दो या अधिक नमूनों की परस्पर तुलना नहीं हो पाती। इस प्रकार विधानात्मक कारणों की तलाश एवम् सामाजिक प्रक्रियागत संरचनाओं की समझ में त्रुटि होना सम्भव हो सकता है। तीसरी आलोचना इस बात की होती है कि इस अध्ययन–विधि का प्रयोग समाज विज्ञान के अध्ययन में यदि किया जाता है तो आँकड़ों की अनुपलब्धता की समस्या आती है। सभी सामाजिक प्रक्रियाओं एवम् परिघटनाओं के आँकड़े नहीं मिल सकते क्योंकि वे विचारात्मक (*आइडियोग्राफिक*) प्रकार के भी हो सकते हैं। अतः इस अध्ययन की भी अपनी सीमाएँ है।

4.3.4 प्रायोगिक अध्ययन / विधि

आनुभविक अध्ययन (*इम्पिरिकल स्टडी*) समाज–विज्ञान की अति अनिवार्यता है। इसमें नियन्त्रित प्रयोग की विधि को भी सम्मिलित कर लिया जाता है। विशेषरूप से मनोविज्ञान एवम् नृविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक अध्ययन का बहुत ही महत्त्व है। इनमें सन्तुलित प्रयोगों के पश्चात् एकत्रित आँकड़ों के विशलेषण के लिए सांख्यिकीय अध्ययन को भी सम्मिलित कर लिया जाता है। यहाँ इस बात पर बल दिया जाता है कि प्रयोग एवम् उनके परिणाम से प्राप्त आंकडे न्यूनतम त्रुटि वाले हों, नहीं तो सांख्यिकीय अध्ययनों का परिणाम एवम् अन्ततः समाज–विज्ञान के तथ्यों के रूप में कारणात्मकता, इकाईयों एवम् संस्थाओं या घटनाओं की संरचनात्मकता तथा प्रक्रियागत अध्ययनों की समझ भी प्रभावित हो सकती हैं। प्रयोगात्मक अध्ययन में प्रश्नावली निर्माण से लेकर मानव एवम् समाज की जटिलताओं एवम् उनसे सम्बन्धित अन्य अन्तर्विषयात्मक परिप्रेक्ष्य को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है। इससे आँकड़ों के एकत्रीकरण एवम् उनकी शुद्धता की गारंटी सुनिश्चित हो पाती है। इस विधि की भी अपनी सीमाएँ हैं। पहली समस्या तो यह है कि जटिल सामाजिक प्रक्रियाओं एवम् परिघटनाओं जिनका व्यक्ति एवम् समाज को बड़े पैमाने पर प्रभावित करने वाले कारक है, कोप्रयोगमूलक अध्ययन का विषय बनाना अत्यन्त कठिन होता है। दूसरी समस्या यह है कि कई बार नैतिक कारणों से भी कुछ विषयों के सम्बन्ध में

प्रयोग की अनिवार्यता समाप्त हो जाती है जो एक समाज–वैज्ञानिक दृष्टिकोण (*अप्रोच*) से बंचित् हो जाता है। ऐसे में तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के प्रत्यक्षवादी निष्कर्षों से बंचित् होकर अपनी व्याख्या के लिए केवल वैचारिक (*आइडियोग्राफिक*) अध्ययन मात्र पर आधारित होने से समाजिक दुनिया के अध्ययनों की सच्चाई में कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। कई बार प्रयोगिक चयन की कठिनाइओं को देखते हुए प्राकृतिक प्रयोग (*नैचुरल एक्सपेरिमेंट*) या कई बार चिन्तन प्रयोग (*थॉट एक्सपेरिमेण्ट*) का भी प्रयोग किया जाता है जिसमें प्रयोग के नाम पर अनिश्चितता एवम् परिणामों में त्रुटि की सम्भावना बढ़ जाती है जो समाज–विज्ञान के अध्ययनों के विपरीत परिणाम देने वाला बन जाता है।

4.3.5 विशिष्ट वृत्यात्मक/आन्तरस्थितिक अध्ययन

अभी अभी हमने यह देखने का प्रयास किया है कि सामान्य विधानात्मक अध्ययन के अर्न्तगत दो प्रमुख विधियों का अध्ययन किया जाता है। पहली, सांख्यिकीय विधि तथा दूसरी प्रयोगात्मक विधि का अध्ययन जिन्हें *नोमोथेटिक मेथड* भी कहते हैं। इसके पश्चात् हम विशिष्ट वृत्यात्मक अध्ययन जिसे *आइडियोग्राफिक मैथड* भी कहा जाता है, का अध्ययन प्रस्तुत करेंगे जो निम्नवत् होगा।

नोमोथेटिक अध्ययन के द्वारा हम एक सामान्य विधानात्मक निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करते है जबकि *आइडियोग्राफिक* अध्ययन या विशिष्ट वृत्यात्मक अध्ययन के द्वारा किसी विशेष घटना, स्थिति या इकाई के अन्तर्गत विशेष रूप से गहराई में जाकर अध्ययन किया जाता है। इसे *केस–स्पेसिफिकस्टडी* भी कहते हैं। इस प्रकार के शोध अध्येताओं को यह विश्वास रहता है कि जटिल सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए अन्य पूर्वोक्त विधियाँ उपयुक्त नहीं है, बल्कि उनमें निहित कारणों के लिए मानव इच्छा–स्वातंत्र्य एवम् कारणबहुलता (*मल्टीकॉजल्टी*) की भूमिका होती है। अतएव इनका अध्ययनविशिष्ट–वृत्यात्मक विधि से ही किया जा सकता है। इस विधि के द्वारा हम तुलना करके दो या दो से अधिक स्थितियों में किन–किन समानताओं एवम् विभिन्नताओं को लेकर *केस–स्टडी* कर सकते है, इसका विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार, हम देखते है कि इस विशिष्ट वृत्यात्मक (*आइडियोग्राफिक*) अध्ययन के द्वारा आन्तरस्थितिक (*विदिन–केस स्टडी*) उपागमों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ आन्तरस्थितिक विधि के अन्तर्गत दो प्रमुख अध्ययनों के स्वरूप पर चर्चा करेंगे जो क्रमशः नृजातीय (*एथनोग्राफिक*) एवम् ऐतिहासिक (*हिस्टॉरिकल*) विधियाँ हैं।

4.3.6 नृजातीय अध्ययन/विधि

इस अध्ययन का सर्वाधिक उपयोग संस्कृति से सम्बन्धित अवधारणाओं की समझ के लिए होता है। इसलिए यह मानवशास्त्र के अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि है। इस अध्ययन प्रणाली के दो घटक हैं जिनमें से प्रथम के अन्तर्गत प्राथमिक आँकड़ों को जुटाने के लिए प्रश्नावली इत्यादि की तैयारी कराकर उसका सर्वेक्षण कराया जाता है। दूसरे घटक के अर्न्तगत आंकड़ों का विश्लेषण एवम् उनके आधार पर निष्कर्ष की प्राप्तियों का प्रर्दशन या प्रस्तुतिकरण किया जाता है। इसमें आख्यान शैली का भी प्रयोग किया जाता है जो प्रायः सामान्यीकृत विचार नहीं उत्पन्न करते, परन्तु इसकी गुणवत्ता आँकड़ों की एवम् विश्लेषणकर्त्ता तथा शोध अध्येताओं की त्रुटिरहित प्रयासों का ही परिणाम होता है। अन्यथा इन विधियों के उपयोग में त्रुटि के कारण निष्कर्ष की प्राप्तियों में बहुत ही अविश्वसनीयता एवम् अनावश्यक तथ्यों का समावेश हो जाता है।

इस विधि या अध्ययन के दो उल्लेखनीय बिन्दु हैं– पहला, कि यह किसीसांस्कृतिक विषय से सम्बन्धित परिघटनाओं की विशेषताओं एवम् प्रक्रियाओं का गहराई तक उतर कर वर्णन करता है, तथा दूसरा कि यह जटिल से जटिल परिघटनाओं का भी सक्षमता के साथ एक विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता है। इस अध्ययन की कुछ कमियाँ भी हैं, जैसे– इस अध्ययन की विधि का प्रयोग किसी ऐतिहासिक परिघटना के लिए नहीं हो सकता। पुनः यह अध्ययन विधि किसी विशिष्ट अध्ययन–क्षेत्र से सर्वाधिक सम्बंधित होने के कारण स्थिति–विशिष्ट (*केस–स्पेसिफिक*) हो जाती है, अतः यह विधि–विज्ञान से सम्बन्धित व्याख्याएँ देने में असमर्थ दिखती है। इस विधि की अन्य कमियों में एक कमी यह भी है कि शोध–अध्येता के द्वारा चयनित किसी अति–सम्वेदनशील मुद्दों के विश्लेषण तथा मानव के धार्मिक भावनाओं आदि से सम्बन्धित किसी बिन्दु पर आँकड़े एकत्रित करने हेतु प्रतिभागियों की उदासीनता या असहयोग के कारण किसी व्यक्ति के निजी जीवन से सम्बन्धित जानकारियाँ नहीं मिल पाती। इस प्रकार ऐसा अध्ययन अधूरा रह जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि इस अध्ययन प्रणाली की भी अपनी सीमाएँ एवम् विषय–क्षेत्र निर्धारित हो जाते हैं तथा तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि से सीधे तौर पर सम्बद्ध नहीं होने की स्थिति बन जाती है।

4.3.7 ऐतिहासिक अध्ययन

ऐतिहासिक अध्ययन या इतिहासलेखन किसी परिघटना या इतिहास के वर्ण्य विषय का किसी काल एवम् स्थान के परिप्रेक्ष्य में आँकड़ों के संकलन एवम् आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर सम्पन्न होता है। किसी काल–क्रम में उपेक्षित विषय के सम्बन्ध में आँकड़ों का संकलन करना, उनका विश्लेषण करना एवम् एक वैध निष्कर्ष पर पहुंचना इतिहासलेखनका केन्द्रीय विषय है। आंकड़ों के संकलन से लेकर वैध निष्कर्ष के निर्धारण तक की सारी प्रक्रिया बहुआयामी एवम् जटिल समस्याओं से ग्रसित् रहती हैं। आँकड़ों की निर्धारण पद्धति में उनका कालिक एवम् स्थानिक परिप्रेक्ष्य निर्धारित करना अत्यन्त ही कठिन एवम् विभिन्न प्रकार की आपत्तियों से ग्रसित् होते हैं। ऐसे में कई अन्य उपयुक्त विधियों का भी आवश्यकता के अनुसार उनका प्रयोग किया जाता है। उसके पश्चात् आँकड़ों के विश्लेषण में विज्ञान सम्मत एवम् कतिपय मानविकीय अध्ययन विधियों का प्रयोग कर कथ्यों से तथ्यों का निरूपण (*इन्टरप्रिटेशन*) एवम् उपस्थापन (*प्रेजेन्टेशन*) करना भी बहुआयामी योग्यता की माँग रखता है, क्योंकि अधिकतर इतिहासलेखन में विवाद का विषय निरुपण या व्याख्या को लेकर उनके आधार पर निकाले गये निष्कर्ष को ही केन्द्र में रखकर होता है।

इतिहास की प्रकृति अन्तर्विषयी होने के चलते इतिहास के अध्ययन की विधि भी अन्तर्विषयात्मक हो जाती है। नृजातीय या मानवशास्त्रीय अध्ययन की तरह ही ऐतिहासिक अध्ययन भी समाज के जटिल परिघटनाओं के अनुशीलन को केन्द्र में रखकर प्रयुक्त होता है। इन दोनों का लगभग प्रयोज्य विषयों में काफी हद तक समानता भी है और अगर इन दोनों के बीच भेद है भी, तो इस बात की, कि नृजातीय अध्ययन अद्यतन घटनाओं एवम् समस्याओं को लेकर चलता है, जबकि ऐतिहासिक विधि भूत की घटनाओं को अपने अध्ययन का विषय बनाता है। ऐतिहासिक अध्ययन भी नृजातीय अध्ययन की तरह ही विशिष्ट स्थितियों का अध्ययन करता है और यही कारण है कि यह *केस–स्टडी* होने के कारण विधि–विज्ञानात्मक समान्यताओं की व्याख्या हेतु बहुत ही कमजोर उपागम बनकर रह जाता है। अन्य अध्ययन विधियों की तरह ही ऐतिहासिक अध्ययन की विधि की भी अपनी कमजोरियाँ है। जैसे कि आँकड़ों

के संकलन में विशिष्टता होने के कारण किसी काल एवम् स्थानवाची परिघटनाओं के विशेष सन्दर्भ में ही इनका महत्त्व रहता है। इनका प्रयोग दूसरी विधा के अध्ययन के लिए भी अग्रसारित हो सकता है, ऐसा कहना थोड़ा कठिन बन जाता है।

4.3.8 मिल की प्रायोगिक विधियाँ

जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने अध्ययन की प्रायोगिक विधियों में कारण–कार्य–सम्बन्ध को जानने का प्रयास किया था। यह आगमनात्मक अनुमान की विधियाँ भी कहलाती हैं। किन्हीं दो घटनाओं या स्थितियों में परस्पर तुलना के द्वारा उनमें उपस्थित कारकों के बीच समानता, विभिन्नता एवम् सहचर्य का प्रदर्शन करते हुए उन घटनाओं या स्थितियों में कारण एवम् उनके परिणाम या कार्य का पता लगाने के लिए मिल ने पाँच प्रकार की अनुसन्धानात्मक प्रविधियों का पता लगाया था जिसमे दो घटनाओं या कार्यों के बीच समान कारक की उपस्थिति को देखते हुये एक दूसरे का कार्य एवम् कारण के रूप में पहचान सुनिश्चित किया था जिसे हम तुलना की अन्वय विधि कहते है। इसी प्रकार तुलना के लिए प्रदत्त दो घटनाओं के आंकड़ों में समान रूप से दो कारकों की अनुपस्थिति की वजह से भी एक दूसरे का कारण कार्य माना जा सकता है जिसे हम व्यतिरेक विधि कहते हैं। पुनः उपर्युक्त इन दोनों घटनाओं में समानता की उपस्थिति एवम् विभिन्नता की अनुपस्थिति के कारण अन्वय–व्यतिरेक विधि के रूप में जाना जाता है। दो प्रदत्त घटनाओं के बीच यदि तीन–तीन कारक उपस्थित हों और उनके बीच दो अलग–अलग कारकों की परस्पर समान उपस्थिति से कारण–कार्य–सम्बन्ध की पहचान सुनिश्चित हो रही हो तो, दोनों घटनाओं के उदाहरणों में अवशेष एक–एक कारक एक दूसरे के कारण–कार्य–सम्बन्ध से युक्त हो जाते है जिन्हें मिल ने अवशेष विधि के रूप में परिभाषित किया है। इस प्रकार आगमनात्मक अनुसन्धान की पाँचवी विधि के रूप में मिल ने सहचारी भिन्नता को स्पष्ट करते हुये यह बतलाया है कि किन्हीं दो घटनाओं के बीच विशिष्ट विभिन्नताओं के साहचर्य के आधार पर उनके बीच कारण–कार्य का पता लगया जा सकता है।

अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करते हुए उसने इस विधि के द्वारा जिस निष्कर्ष की स्थापना का प्रयास किया, वह किसी विशिष्ट उदाहरण से सामान्य घटनाओं के सम्बन्ध में अनुमान होने की वजह से सार्वकालिक वैधता की कमी को दर्शाता है। इस प्रकार अन्वय, व्यतिरेक, अन्वय–व्यतिरेक की संयुक्त विधि, सहचारी भिन्नता एवम् अवशेष विधियों की सहायता से कारणता की भूमिका पर मिल ने गहनता से विचार किया है। परन्तु इतिहास के बोध हेतु यह प्रत्यक्षतः उपयोगी नहीं सिद्ध हो सकता। ऐतिहासिक परिघटनाओं के सम्बन्ध में कारणबहुलता की भी भूमिका देखी जाती है, जबकि मिल के अनुसार एक ही कारण सार्वभौम रूप से सार्वकालिक एवम् सभी स्थितियों में अपनी उपस्थिति से कार्य या प्रभाव का प्रदर्शन कर सकते हैं जो ऐतिहासिक परिघटनाओं की सभी स्थितियों में लागू नहीं हो सकती। अतः मिल की कारण–कार्य सम्बन्धों पर प्रकाश डालने वाली विधियों की भी अपनी सीमाएँ हैं जो तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन में कदाचित् आंशिक रूप से अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सकती हैं।

शोध अध्ययनों की उपर्युक्त विधियों के सम्बन्ध में विचार करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन अपने स्वरुपगत वर्णन के लिए इन समस्त् शोध की विधियों की सहायता या तो आंशिक रूप से या इनसे भिन्न रहते हुए समाज विज्ञान की एक विशिष्ट विधि के रूप में अवश्य ही प्रयोग में लेता है जिसके द्वारा कारणता, सामाजिक प्रक्रियायों एवम् विभिन्न प्रतिरूपों के परिवर्तनों के सामाजिक

अध्ययन में सहायता मिलती है। इनके अतिरिक्त सर्वाधिक विचारणीय विषय यह है कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन को तुलना एवम् इतिहास के विशेष सन्दर्भ में कैसे जाना जा सकता है, इसका स्वरूप क्या हो सकता है इत्यादि, इन तथ्यों पर निम्न बिन्दुओं पर विचार करके इसकी स्पष्टता और बढ़ा सकते हैं।

4.3.9 तुलना एवम् इतिहास के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन / विधि

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन तुलना एवम् आन्तरस्थितिक प्रविधियों को संयुक्त कर लेता है। इस तरह यह अध्ययन तुलनात्मक एवम् विधि–विज्ञानात्मक (*कम्परेटिव–नोमाथेटिक*), विचारात्मक–आन्तरस्थितिक (*आइडियोग्राफिक–विदिन–केस स्टडी*) विधियों से युक्त रहता है। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन सांख्यिकीय एवम् प्रायोगिक विधियों की तरह कारण निर्धारको हेतु तथा पुनश्च, नृजातीय तथा ऐतिहासिक विधियों की तरह विशिष्ट घटनाओं के कारण की खोज में प्रयुक्त होता है। हाँलाकि, तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन अन्य विधियों की तरह सामान्यतया परम्परागत रूप से नहीं जुड़ पाता है। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन किसी भी अन्य विधियों के साथ आवश्यकता के अनुसार एवम् विशेष सन्दर्भों में ही आंशिक रूप से जुड़ पाता है। तात्पर्य यह है कि यह अध्ययन समस्त् प्रायोगिक एवम् ऐतिहासिक विधियों के मध्यमार्गीय संयोजन को ही स्वीकार कर पाता है। प्रायोगिक विधि को इसकी सम्पूर्णता में नहीं स्वीकार करने के दो कारण हैं। पहला कि यह वास्तविक जगत् की घटनाओं के वास्तविक विश्लेषण एवम् ठोस शोधमूलक प्रश्नों पर आश्रित होता है, जबकि समाज–विज्ञान अपनी जटिलताओं के कारण ही विज्ञान की ठोस अध्ययन प्रणाली से अछूता रह जाता है। इसका दूसरा कारण यह है कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन नैतिक एवम् व्यावहारिक अभिप्रायों के चलते किसी सामाजिक या ऐतिहासिक मुद्दे को नियन्त्रित तरीके से अध्ययन का विषय नहीं बना सकता।

इसी प्रकार तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन उपर्युक्त विधियों की तरह ही नृजातीय एवम् ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन के लिए भी परम्परागत रूप से प्रयुक्त होने वाली विभिन्ना विधियों के मध्यमार्गीय प्रयोग की वकालत करता है। ऐतिहासिक विधि काप्रयोग तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन हेतु प्रायशः इसलिए किया जाता है कि अध्ययन हेतु आँकड़ो को इकट्ठा एवम् उनका विश्लेषण किया जा सके। अब हम यहाँ पर देख सकते हैं कि यद्यपि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन पृथक्–पृथक् नृजातीय एवम् ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक विधियों का प्रयोग कर सकता है, परन्तु ऐतिहासिक विधि के प्राथमिक आँकड़ों का प्रयोग न करके द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग होता है, जबकि तुलना के द्वारा समाज–विज्ञान के कारणात्मक पहलुओं को खोजने में सहायता मिलती है। इस प्रकार ऐतिहासिक अध्ययन से प्रक्रियागत परिवर्तनों का वर्णन एवम् निरूपण तथा तुलनात्मक विधि के द्वारा कारणात्मक नियमों की सामान्य विज्ञानमूलक व्याख्याएँ हो जाती हैं। अन्ततः, हम देख पाते हैं कि यह अध्ययन आख्यानों के द्वारा कारण–प्रक्रिया तथा प्रक्रिया के द्वारा कारण–नियमों का एवम् प्रतिरूप–साम्य के द्वारा सिद्धान्तों का परीक्षण कर पाता है। यहाँ हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के अन्तर्गत तुलना की बहुत सारी विधियों तथा इतिहास की भी बहुत–सारी विधियों का सम्मिलित प्रयोग कर एक सटीक निष्कर्ष तर्क पहुंचने का प्रयास किया जाता है।

पुनः, विचारात्मक (*आइयोग्राफिक*) एवम् विधि–विज्ञानात्मक (*नोमोथेटिक*) व्याख्याओं के सन्दर्भ में भी तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन को समझा जा सकता है। यहाँ द्रष्टव्य है कि आन्तरस्थितिक विधि विचारात्मक ज्ञान, जबकि तुलनात्मक अध्ययन विधि–विज्ञानात्मक ज्ञान की प्रस्तुति करता है। जब हम इन्हें एक साथ जोड़कर प्रयोग करते हैं तो विचारात्मक एवम् विधि–विज्ञानात्मक दोनों प्रस्तुतियाँ कमजोर हो जाती हैं। तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के द्वारा विचारात्मक (*आइडियोग्राफिक*) ज्ञान की गहनता प्राप्त की जाती है। स्कोकपॉल, टिली एवम् सोमर्स ने तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का लक्ष्य विचारात्मक प्रस्तुति को ही बतलाया है। फिर भी, विचारात्मक ज्ञान की प्राप्तियाँ तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन में न्यूनतम तथा इतिहास एवम् ऐतिहासिक समाजशास्त्र में अपेक्षाकृत अधिकतम होता है। विचारात्मक प्राप्तियों से भिन्न विधि–विज्ञानात्मक (*नोमोथेटिक*) अध्ययन बहुस्थितिक ज्ञान की प्राप्तियों की प्रस्तुति देता है जो तुलनात्मक विधि की अच्छाई है। लगभग समाज–विज्ञानी *नोमोथेटिक* व्याख्या (यानि विधि–विज्ञानात्मक अध्ययन) को *आइडियोग्राफिक* व्याख्या (यानि विचारात्मक अध्ययन) की तुलना में अधिक तार्किक एवम् विज्ञान सम्मत मानते हैं। तथापि उपयोगिता एवम् वर्ण्य–विषयों की दृष्टि से *नोमोथेटिक* व्याख्याएँ *आइडियोग्राफिक* व्याख्याओं की तुलना में कमतर स्वीकार की जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि *नोमोथेटिक मेथड* आन्तरस्थितिक अध्ययन को छोड़कर चलता है। वहीं पर यदि *आइडियोग्राफिक* को देखें तो यह भी *नोमोथेटिक* व्याख्याओं को सामान्यतः बाधित करता है। हाँलाकि स्कोकपॉल ने इन दोनों विधियों–*आइडियोग्राफिक* एवं *नोमोथेटिक* के बीच सन्तुलन लाने की वकालत करते हैं, क्योंकि इसके द्वारा अध्ययन की सटीक व्याख्या एवम् उसकी समग्रता में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन इन दोनों का मध्यवर्ती स्थिति में रखकर अध्ययन करना भी आलोचनाओं से परे नहीं है, इसका कारण यह है कि दोनों परम्परा के चिन्तक प्रतिपक्षियों की कमियों की ओर नजर रखते हैं।

इस प्रकार अधिकांश विद्वानों का यह मानना है कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के लिए *आइडियोग्राफिक* (विचारात्मक) एवम् *नोमोथेटिक* (विधिमूलक या विधि–विज्ञानात्मक) व्याख्याएँ अनिवार्य एवम् महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि समाज विज्ञान के सूक्ष्म इकाईयों से लेकर स्थूल संस्थाओं के अध्ययन के लिए विशिष्ट एवम् सामान्य अध्ययन की प्रस्तुतियों वाले इन दोनों विधियों की जरूरत पड़ती है। अतः एक के लिए दूसरे का परिहार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार बहुमत में विचारकों की चिन्तनधारा में तुलना एवम् इतिहास के सम्यक् अध्ययन के लिए *आइडियोग्राफिक* एवम् *नोमोथेटिक* व्याख्याएँ तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की युग्मित रुप से अपरिहार्य शर्तें हैं।

4.4 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययनों की कठिनाइयाँ

उपर्युक्त परिभाषीय व्याख्याओं के आलोक में यदि तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की कठिनाइओं पर दृष्टिपात किया जाय तो हम पाते हैं कि इस अध्ययन–विधि की प्रमुख कठिनाइयाँ इस प्रकार हैं– (क)तुलना एवम् विश्लेषण के लिए ली गई सामाजिक इकाईयों का चयन करना एवम् उन्हें परिभाषित करना (ख) विभिन्न घटनाओं एवम् स्थितियों की अन्तराश्रितता (ग) उन घटनाओं एवम् स्थितियों का प्रतिनिधित्व नहीं करना जो तुलना के लिए अन्य सन्दर्भों से ग्रहित होते हैं जिसके कारण यह असफल प्रतित होता है (घ) देश एवम् काल के सापेक्ष अवधारणा या सिद्धान्त निर्माण एवम् मापन इत्यादि की विश्वसनीयता एवम् वैधता की समस्या (ड.) आंकड़ों का अभाव जो

लम्बे समय से रहा हो एवम् नयी आ रही समस्याओं की आवश्यकताओं के अनुसार उनका अभाव (च) ऐतिहासिक लेखन एवम् संरक्षण की समस्या (छ) देश एवम् काल के सापेक्ष उपलब्ध आकड़ों के प्रयोग की समस्या जो उचित् सन्दर्भों के साथ उपलब्ध हों (ज) विभिन्न चिन्तनधाराओं में सामाजिक शोध अध्ययन की विधियों की बहुलता एवम् उनके प्रयोगार्थ चयन की समस्याँ इस प्रकार हम देख सकते हैं कि इन समस्याओं के चलते इस अध्ययन की कठिनाइयाँ और भी बढ़ जाती हैं।

4.5 तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन का भविष्य

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन की उपर्युक्त विवेचनात्मक रूपरेखा एवम् कठिनाईओं कोदृष्टिगत रखते हुए सामाजिक प्रक्रियाओं, कारणात्मक विवेचनों एवम् विभिन्न प्रतिमानों के सम्बन्ध में अध्ययन की विधियों में इसका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस अध्ययन की विभिन्न प्राविधिक अस्पष्टताओं के बावजूद इसकी अनिवार्य प्रयोज्यता इसके भविष्य को रेखांक्ति करती है। जटिल सामाजिक समस्याओं के अध्ययन एवम् तत्पश्चात् देश एवम् काल के सापेक्ष सर्वमान्य सिद्धान्तों या विंध्यात्मक नियमों की रचना किसी एक विधि के प्रयोग सें सम्भव नहीं है। अतएव तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन परम्परा में विभिन्न विधियों के प्रयोग से सूक्ष्म से लेकर जटिल तक तथा विशिष्ट से लेकर सामान्य तक विभिन्न सामाजिक विषयों का अध्ययन करने के कारण तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि हमेशा अपने महत्त्व को बतलाती रहेगी। किसी एक दृष्टि की तुलना में एक ही तथ्य के सम्बन्ध में कई दृष्टियों से विचार करने पर उसके परिपक्व स्वरूप का पता चल जाता है। अतः यह विधि सम्माजिक विज्ञान के अध्ययन हेतु वैज्ञानिक से लेकर मानवशास्त्रीय विचारों की प्रस्तुति के लिए सर्वाधिक उपादेय प्रतीत होती है।

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के स्वरूप पर गहनता से विचार करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि यह विधि अकेले न तो तुलनात्मक है और न ही ऐतिहासिक। इन दोनों विधियों को एक साथ संयुक्त कर लेने के पश्चात् इनके तकनिकी अर्थों में महत्त्वपूर्ण बदलाव देखने को प्राप्त होता है। इसके परिभाषीय शर्तों एवम् स्वरूप पर प्रमुखता से विचार करने पर यह वर्तमान में प्रयोग में लायी जाने वाली अनेक अनुसन्धान की विधियों में प्रमुख स्थान रखती है। हाँ, यह अवश्व है कि मानविकी विषयों की तुलना में समाज विज्ञान एवम् उसमे भी विशिष्ट रूप से समाजशास्त्र के अध्ययन में बहुधा प्रयुक्त होने वाली विधि है। यही कारण है कि कई बार इसे समाजशास्त्रीय विधि के रूप में भी जाना जाता है। इस विधि का महत्त्व तब बढ़ जाता है जब यह विज्ञान सम्मत एवम् मानविकी अध्ययनों के क्षेत्र में प्रयोग में लायी जाने वाली अनेक विधियों का उपयोग करती है, परन्तु उनके विशिष्ट ऐकांतिक प्रयोगों से अपनी पृथकता बनाते हुये एक समग्र शोध–अध्ययन की विधि (*होलिस्टिक रिसर्च मेथड*) के रूप में प्रस्तुत करती है जिससे सामाजिक शोध की समझ की गहराई में जाने में मदद मिलती है। इस प्रविधि का प्रमुख झुकाव वैज्ञानिक व्याख्याओं हेतु उपयुक्त तर्कों की संरचना तैयार करना होता है।

4.6 सारांश

तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन सामाजिक जगत् के विभिन्न प्रत्ययों एवम् उनकी प्रक्रियागत परिवर्तनों एवम् कारणात्मक सम्बन्धों के विचारों के अध्ययन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न शोध–अध्ययन की प्रविधियों में से एक है। इस अध्ययन कीविधि को समझने के लिए शोध–विधि हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्ना

विधियों की परम्पराओं के अध्ययन के अर्न्तगत कतिपय समाज वैज्ञानिक विधियाँ जैसे–सांख्यिकीय, प्रयोगशाला विधि, नृजातीय अध्ययन, जॉन स्टुअर्ट मिल की प्रायोगिक विधियाँ, तुलनात्मक एवम् ऐतिहासिक विधियों के एकल अवधारणात्मक प्रयोगों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जता है कि तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि में इन सबका एक सम्मिलित प्रयोगमूलक योगदान है। या यों कहें कि यह अध्ययन इन समस्त् पूर्वोक्त वर्णित विधियों का एक सम्यक् मिश्रण है। सम्पूर्णता में इसकी व्याख्या करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो पाता है कि यह विधि विचारात्मक (*आडियोग्राफिक*) एवम् विधि–विज्ञानात्मक (*नोमोथेटिक*) विभाजनों के अध्ययन विधियों के स्पष्ट विभाजन एवम् उनके सन्तुलित प्रयोग पर बल देने वाला अध्ययन है। ऐसा इसलिए भी है कि *नोमोथेटिक* व्याख्याएँ विज्ञानमूलक होने के कारण कारणात्मक प्रक्रियाओं के नियम तथा *आइडियोग्राफिक* व्याख्याएँ इतिहास एवम् देश–काल के सापेक्ष उपस्थित नृजातीय एवम् मानवीकी के विशिष्ट अध्ययनों की प्रस्तुति देती है। इस अध्ययन के समर्थक विचारकों का बहुमत दोनों के सन्तुलन एवम् तार्किक चयन के पश्चात् वर्णनात्मक एवम् निरूपणात्मक ज्ञान–तन्त्र (*सिस्टम ऑफ नालेज*) की प्रस्तुति के उवाचक हैं। वर्तमान में समाज–विज्ञान के विभिन्न उप–विषयों में अन्तर–अनुशासनात्मक अनुशीलन में बहुत ही लोकप्रिय अध्ययन के रूप में तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि की गणना की जाती है।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

क) **विधि–** आँकड़ों के संकलन एवम् विश्लेषण से लेकर निष्कर्ष तक पहुंचने की तकनीकि प्रक्रिया को मानविकी एवम् सामाजिकी विषयों के अध्ययन को विधि कहते है। इसका व्यापक अर्थ नियम एवम् सिद्धान्तों की संरचना से है।

ख) **आन्तरस्थितिक विधि या अध्ययन–** किसी परिघटना की विशेष स्थिति के सापेक्ष किया गया तकनीकी अध्ययन जिसे *विदिन–केस स्टडी* कहते हैं। यह किसी तन्त्र के भीतर गहनता से किये गये अध्ययन की प्रक्रिया है।

ग) **सांख्यिकीय विधि–** आंकिक आँकड़ो की सहायता से किया गया वह तकनीकी अध्ययन जो विभिन्न, कारको, चरों एवम् अचरों के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

घ) **नृजातीय अध्ययन/विधि–** समाज वैज्ञानिक विधि का एक उप प्रकार जो विभिन्न मानव–समूह के कला, शास्त्र एवम् मौखिक इतिहास के सहारे की जाने वाली तकनीकी विधि या प्रक्रिया है जिसमें मानव जीवन के साथ–साथ उसकी संस्कृति एवम् विकास की स्थिति का आंकलन प्रस्तुत किया जाता है।

ड.) **प्रयोगमूलक विधि–** शोध अध्ययन की वह प्रक्रिया जो सामाजिक वर्ण्य विषयों पर विज्ञानमूलक तरीके से अध्ययन की स्वीकृति प्रदान कर उनमे तर्कतः वैध उपस्थापनाओं को प्रस्तुति करती है। यह विधि एक संकल्पनामूलक अनुप्रयोगों के पश्चात् प्राप्त परिणाम के सापेक्ष सिद्धान्त निर्माण एवम् सत्यता के कथन को स्पष्ट करती है जो विज्ञान में आस्था का सबसे प्रबल कारक है।

च) **ऐतिहासिक विधि–**इस विधि को इतिहास लेखन की विधि भी कहते हैं। इतिहास के अध्ययन हेतु यह सर्वाधिक प्रयोज्य एवम् अन्य सामाजिक उपागमों के अध्ययन में भी महत्त्वपूर्ण प्रविधि हैं। इसमें आख्यान शैली के प्रयोग से विभिन्न आँकड़ो का विश्लेषण होता है। इस विधि के अन्तर्गत विभिन्न निरूपणों के द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान तन्त्र को समझने में सहायता प्राप्त होती है।

छ) **तुलनात्मक विधि–** सूक्ष्म से लेकर स्थूल तक विभिन्न समाजिकइकाईयों के बीच कारणात्मक, प्रक्रियात्मक एवम् प्रतिमानमूलक समानताओं एवम् विभिन्नताओं का अध्ययन इस विधि के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। यह तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन विधि हेतु अनिवार्य प्रक्रियामूलक विधि है।

ज) **विचारात्मक (*आइडियोग्राफिक*) व्याख्याएँ–** यह विभिन्न प्रकार की जटिल समस्याओं के भीतर लघु स्थितियों के अन्तर्गत किसी विशिष्ट परिघटना में कारणात्मक व्याख्याओं का अध्ययन है। यह विधि या अध्ययन किसी बड़े आकार के प्रतिमानों को अपना विषय नहीं बनाता।

झ) **विधि विज्ञानात्मक (*नोमोथेटिक*) व्याख्याएँ–** यह विचारात्मक अध्ययन की तरह ही कारणमूलक अध्ययन की प्रक्रिया है, परन्तु इसके प्रतिमानों (*मॉडल्स*) का आकार बड़ा एवम् जटिल होता है। यह उसकी तुलना में अत्यधिक विज्ञान–सम्मत एवम् तार्किक होता है। इसमें निष्कर्ष की सामान्यता पर बल दिया जाता है।

ञ) **तुलनात्मक–ऐतिहासिक विधि–** यह शोध अध्ययन की सूक्ष्म से लेकर जटिल स्तर की समाज–विज्ञान से सम्बद्ध विभिन्न विषयों का एवम् परम्परा से प्राप्त विभिन्न शोध विधियों की सहायता या प्रयोग करके प्रमुख रूप *आइडियोग्राफिक* एवम् *नोमोथेटिक* व्याख्याओं के सन्तुलन पर बल देने वाली विधि है।

4.8 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

i) महोनी, जे०, रुश्चेमेयर डी० (सम्पा०) 2003, *कॉम्परेटिव हिस्टॉरिकल एनालिसिस इन द सोशल साइंसेज,* कैम्ब्रीज, यू० के० कैम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस।

ii) महोनी, जे० रुश्येमेयर डी०, 2003, *कम्परेटिव हिस्टॉरिकल एनालिसिसः अचीवमेण्ट्स एण्ड एजेण्डाज*।

iii) गोल्डथोर्पे, जे० एच्०, 2000, *ऑन सोसियोलॉजीः नम्बर्स, नरेटिव एण्ड दि इन्टिग्रेशन ऑफ रिसर्च एण्ड थियरी,* आक्सफोर्ड, यू० के०, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

iv) जेरींग जे०, 2001, *सोशल साइंस मेथडोलॉजी : अ क्राइटेरियल फ्रेमवर्क,* कैम्ब्रीज, यू० के०, कैम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस।

v) अब्राम, फिलिप्स, 1992, *हिस्टॉरिकल सोशियोलॉजी,* इथाका न्यू यार्क, कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।

vi) एडम एण्ड ट्यूने, 1970, *द लॉजिक ऑफ कॉम्परेटिव सोशल इन्क्वायरी,* न्यू यार्क।

4.9 बोध प्रश्न

i) तुलनात्मक विधि पर प्रकाश डालिएँ

ii) ऐतिहासिक विधि का विवेचन कीजिए

iii) आन्तरस्थितिक अध्ययन क्या है? समझाइए

iv) विचारात्मक (*आइडियोग्राफिक*) व्याख्याएँ क्या है? सौदाहरण समझाइए

v) विधिमूलक (*नोमाथेटिक*) व्याख्याएँ किसे कहते हैं? विवेचन कीजिए

vi) तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन के विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में वैचारिक विकास को रेखांक्तिकीजिए

vii) प्रत्यक्षवाद क्या है? समझाइए

viii) तुलनात्मक–ऐतिहासिक अध्ययन को सविस्तार विवेचन कीजिए

ix) इतिहासलेखन क्या है? इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए

x) शोध–अध्ययन को समझाइए।